



सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India



NISPR
National Institute of Science Communication and Policy Research
सीएसआईआर-निसप्र

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 2

www.csir.res.in

फरवरी 2024

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2023 का आयोजन



डॉ. जितेंद्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (टीएचएसटीआई)—क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र (आरसीबी) संयुक्त परिसर, फरीदाबाद में 17 जनवरी 2024 को भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2023 का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह के अन्य गणमान्य व्यक्तियों में श्री मूलचंद शर्मा, कैबिनेट मंत्री, उच्च शिक्षा, परिवहन,

खान और भूविज्ञान और चुनाव, हरियाणा सरकार; प्रो. अजय कुमार सूद, पीएसए, भारत सरकार; प्रोफेसर अभय करंदीकर, सचिव, डीएसटी; डॉ. एम. रविचंद्रन, सचिव, एमओईएस; डॉ. एन. कलैसेल्वी, सचिव, डीएसआईआर एवं महानिदेशक, सीएसआईआर, डॉ. राजेश एस. गोखले, सचिव, डीबीटी; सुश्री ए. धनलक्ष्मी, संयुक्त सचिव, डीएसटी; श्री शिवकुमार शर्मा, राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती (विभा) शामिल थे।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस उद्घाटन समारोह के दौरान तीन प्रमुख कारणों यथा—चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर भारत के चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग भारत द्वारा दूसरी कोविड वैक्सीन विकसित करना और तीसरा अरोमा मिशन की उपलब्धियों को इस विशाल महोत्सव में मनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत कम समय में सफल डीएनए वैक्सीन बनाने वाला पहला देश है। अब हम दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में पांचवें स्थान पर पहुंच गये हैं। भारत विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के बल पर वैश्विक ख्याति प्राप्त करने वाला देश बन गया है। माननीय मंत्री महोदय ने विशाल सभा को संबोधित करते हुए कुछ वर्षों के भीतर भारत सरकार द्वारा किए गए पांच महत्वपूर्ण निर्णयों की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया जिनमें सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से अंतरिक्ष सुधार कार्यक्रम, राष्ट्रीय क्वांटम मिशन, अनुसंधान-नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ), राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) शामिल था। डॉ. सिंह ने इस अवसर पर अपने संबोधन में यह

भी कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से राष्ट्रीय विकास के लिए, अब हम सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से भारतीय समस्याओं के भारतीय समाधान, भारतीय अनुसंधान के लिए भारतीय डाटा, भारतीय लोगों के लिए भारतीय डॉक्टरों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

प्रोफेसर अभय करंदीकर, सचिव, डीएसटी ने इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2023 में 23 देशों से आने वाले सभी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मेहमानों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह महोत्सव देश भर से वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए प्रकाशस्तंभ बन गया है। उन्होंने दर्शकों को 17-20 जनवरी 2024 तक चार दिनों तक संचालित होने वाले कार्यक्रमों के संक्षिप्त परिचय के साथ-साथ आईआईएसएफ 2023 के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे युवा छात्र और शोधकर्ता हमारे देश द्वारा की गई वैज्ञानिक प्रगति से प्रेरित और उत्साहित होते हैं और उनमें भारत को वैश्विक नेता बनाने की भावना विकसित होती है।

आईआईएसएफ का पहला संस्करण 2015 में मनाया गया था। इस वर्ष महोत्सव का नौवां संस्करण मनाया गया। समाज का प्रत्येक वर्ग इस महोत्सव में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों को लेकर काफी उत्साहित था। एक बड़ा क्षेत्र आईआईएसएफ के अंतिम लक्ष्य को पूरा करने वाले हर आयु वर्ग और समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से भरा हुआ था। यह "सभी द्वारा विज्ञान का उत्सव" को दर्शाता है। इस वर्ष का केंद्रीय विषय "अमृत काल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी तक आम-जन की पहुँच" था।

उद्घाटन सत्र के दौरान, गणमान्य



व्यक्तियों द्वारा आईआईएसएफ कार्यक्रम गाइड और आईआईएसएफ समाचार बुलेटिन के क्षेत्रीय भाषाओं के विशेष संस्करण जारी किए गए।

ये भाषा संस्करण सात भारतीय भाषाओं (मलयालम, बांग्ला, हरियाणवी, भोजपुरी, हिंदी, मराठी और उर्दू) में निकाले गए। सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) के विज्ञान मीडिया संचार सेल (एसएमसीसी) ने आईआईएसएफ समाचार बुलेटिन के इन भाषा संस्करणों को तैयार, डिजाइन और प्रकाशित किया था।

श्री मूलचंद शर्मा, कैबिनेट मंत्री, हरियाणा सरकार ने कहा कि ज्ञान और नवीन विचारों के आदान-प्रदान से देश की प्रगति होती है, भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित ज्ञान साझा करने का सही मंच है।

प्रो. अजय सूद, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (पीएसए), भारत सरकार ने कहा कि आईआईएसएफ 2023 का दृष्टिकोण विज्ञान को न केवल किताबों में बल्कि कई रोचक और बौद्धिक तरीकों से जनता के लिए सुलभ बनाना है। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कई क्षेत्रों के

□ "भारत विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की ताकत के साथ वैश्विक ख्याति प्राप्त करने वाला देश बन गया है"

डॉ. जितेंद्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री

साथ अपने कार्यक्रमों के माध्यम से वैज्ञानिक विषयों की गहरी समझ प्राप्त करने के व्यापक अवसर प्रदान करता है।

डॉ. शिवकुमार, राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती (विभा) ने दर्शकों और उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों का अभिवादन किया। उन्होंने हमारी भारतीय परंपरा और उन मूल्यों पर जोर दिया जिनमें विज्ञान अंतर्निहित है और कहा कि विज्ञान एक उत्सव है। उन्होंने बताया कि विज्ञान महोत्सव का आयोजन इस बात पर विचार करने और लागू करने के उद्देश्य से किया जाता है कि प्रयोगशालाओं से विज्ञान कैसे समाज तक पहुंचे या उपलब्ध हो और आम जनता के लिए उपयोगी हो।

मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य

व्यक्तियों को डॉ. पी.एस. गोयल, अध्यक्ष, कार्यक्रम समिति, आईआईएसएफ 2023, द्वारा जमीनी स्तर के एक इनोवेटर द्वारा बनाए गए गाय के गोबर के बर्तन और मिट्टी के ठंडे पानी की बोतल भेंट करके सम्मानित किया गया।

विज्ञान के जमीनी स्तर के नवाचारों को समाज तक लाने के इस व्यापक विज्ञान कार्यक्रम के उद्देश्यों में से एक को साकार करने के मकसद से ये उपहार भेंट किए गए।

आईआईएसएफ 2023 के पहले दिन के लिए निर्धारित कार्यक्रमों में स्टूडेंट साइंज विलेज, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नए विषयों की पहचान, खेल और खेलौनों के माध्यम से विज्ञान, विद्यार्थी नवाचार महोत्सव – स्पेस हैकथॉन 2023, राज्य एस एंड टी मंत्री और केंद्र एवं राज्य एस एंड टी सचिव तथा अधिकारियों का कॉन्क्लेव, आकांक्षी भारत के लिए शिक्षा – राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षक कार्यशाला, युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, नए युग की प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी, राष्ट्रीय सामाजिक संगठनों और संस्थानों की बैठक (एनएसओआईएम),



विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार प्रदर्शनी और भारत अंतर्राष्ट्रीय सहयोग समेत एक सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल था।

इस विशाल विज्ञान महोत्सव का आयोजन 17-20 जनवरी 2024 तक जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी)-क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी) और ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान(टीएचएसटीआई), फरीदाबाद (हरियाणा) के संयुक्त परिसर में किया गया।

विज्ञान के इस भव्य उत्सव का उद्देश्य विज्ञान को समाज से जोड़ने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ देश द्वारा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में वैज्ञानिक उपलब्धियों का

सम्मान करना और उन्हें उजागर करना था।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) के साइंस मीडिया कम्युनिकेशन सेल (एसएमसीसी) द्वारा भारत अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव (आईआईएसएफ) 2023 के मीडिया प्रचार का समन्वयन तथा सुविधा प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान (एनआईएफ), भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) का एक स्वायत्त संगठन है, इस संस्थान को आईआईएसएफ 2023 के समन्वयन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा विज्ञानिका 2023 का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) द्वारा भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2023 के एक भाग के रूप में विज्ञानिका: विज्ञान साहित्य महोत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन 18 जनवरी 2024 को प्रोफेसर रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर के स्वागत भाषण के साथ शुरू हुआ। प्रो. अग्रवाल ने वैज्ञानिक सोच के महत्व और वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए

सीएसआईआर-निस्पर की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कठपुतली और कविताओं जैसे विविध माध्यमों के जरिये भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार के महत्व पर जोर देते हुए वैज्ञानिकों और विज्ञान उत्साही लोगों के बीच नेटवर्किंग के एक मंच के रूप में विज्ञानिका की भूमिका को रेखांकित



किया। इस अवसर पर डॉ. दिनाकर एम. सालुंके, पूर्व निदेशक, आईसीजीईबी और डीबीटी-आरसीबी, डॉ. सुभ्रा चक्रवर्ती, निदेशक, राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, और श्री. ए. जयकुमार, विज्ञान भारती, उद्घाटन समारोह के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। प्रो. सालुंके ने वैज्ञानिक सोच बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया और स्वीकार किया कि विज्ञानिका जैसे विभिन्न समावेशी प्रयासों के माध्यम से आम जनता और वैज्ञानिकों के बीच की खाई को पाटा जाना चाहिये। डॉ. सुभ्रा चक्रवर्ती ने शिक्षा में विज्ञान और साहित्य जैसे विभिन्न क्षेत्रों को एकीकृत करने के लिये नई शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों के साथ तालमेल बिठाते हुए विज्ञान पर चर्चा को बढ़ावा देने में विज्ञानिका की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने नवीन प्रौद्योगिकियों के विकास पर भी प्रकाश डाला जो भारत को तकनीकी रूप से दक्ष देश बनाने में सक्षम हैं और कहा कि इन प्रौद्योगिकियों को विज्ञान संचार चैनलों के माध्यम से आम-जनमानस तक ले जाने की आवश्यकता है।

श्री ए. जयकुमार, विज्ञान भारती ने भारत की समृद्ध साहित्यिक परंपरा पर चर्चा की, जिसमें विज्ञान से लेकर कूटनीति तक अनेक विषयों को शामिल किया गया। उन्होंने आम जनता के बीच विज्ञान के प्रसार और समकालीन विज्ञान और साहित्य को एक साथ लाने में विज्ञानिका जैसे आयोजनों के योगदान को मान्यता दी, जो लंबे समय से भारतीय ज्ञान प्रणालियों में जुड़े हुए हैं।

उद्घाटन सत्र का समापन सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. परमानंद बर्मन के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी सार्वजनिक आउटरीच विषय पर वैज्ञानिक सत्र-1



की शुरुआत सत्र के अध्यक्ष प्रोफेसर बी.एन. जगताप, वरिष्ठ प्रोफेसर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई के परिचय के साथ हुई। उन्होंने विज्ञान में नागरिक भागीदारी के महत्व की वकालत की, जिसे विज्ञान संचार प्रयासों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जो रोजमर्रा की जिंदगी में साक्ष्य-आधारित विज्ञान और वैज्ञानिक तरीके से सोचने को प्रोत्साहित करता है। प्रो. दिनाकर एम. सालुंके ने मुख्य भाषण में भारतीय वैज्ञानिकों के ऐतिहासिक योगदान पर जोर देते हुए वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रयोगशालाओं से आम जनता तक विस्तारित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने उदाहरण के तौर पर अंतरिक्ष और वैक्सीन प्रौद्योगिकी में भारत की हालिया उपलब्धियों का उपयोग और स्वदेशी प्रयासों को शामिल करते हुए नवीन वैज्ञानिक प्रयासों के वित्तपोषण के महत्व पर भी चर्चा की।

उमा कुमार, प्रोफेसर, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली ने चिकित्सा जगत में मरीजों के साथ बातचीत के उदाहरण का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक संचार में प्रशिक्षण के महत्व पर चर्चा की, जो प्रभावित कर सकता है कि व्यक्ति उभरती प्रौद्योगिकियों या विकासशील दवाओं और टीकों को कैसे समझते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विज्ञान संचार पहल को

सफल बनाने के लिये स्थानीय नेताओं और नवीन प्रौद्योगिकियों को शामिल किया जाना चाहिए और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। गोबर्धन दास, प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने विज्ञान को अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि भाषा उसमें अवरोध न बने। के.सी.बंसल, पूर्व निदेशक, आईसीएआर-एनबीपीजीआर ने जीनोम संयोजन और जीएम फसलों पर व्याख्यान दिया।

विज्ञानिका का अगला सत्र अपनी भाषा अपना विज्ञान: भारतीय भाषाओं में विज्ञान-संचार को सुदृढ़ बनाना विषय पर आयोजित किया गया। इस प्रेरक सत्र की अध्यक्षता भारतीय भाषा समिति के अध्यक्ष पद्मश्री चामू कृष्ण शास्त्री ने की और इसमें तमिल, असमिया, पंजाबी, मणिपुरी, मलयालम और उड़िया सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञों की चर्चा शामिल थी। सत्र के पैनलिस्ट प्रोफेसर वी. पी. एन. नामपुरी, डॉ. नीलिमा जेरेथ, डॉ. एच.बी. सिंह, डॉ. उथरा दोरैराजन, डॉ. मंटू भुइयां और प्रोफेसर सरोज कांत बारिक थे। चर्चा के दौरान, विशेषज्ञों ने भाषायी बाधाओं को पार करने और संचार को मजबूत करने

के लिये भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक संचार के महत्व पर जोर दिया। पैनल चर्चा के बाद सीएसआईआर-निस्पर और सीएसआईआर-नीस्ट की एक सहयोगी पहल, एक असमिया पत्रिका, विज्ञान लहर का विमोचन किया और फिर एक तमिल पिलप पुस्तक 'ट्रेजर्स ऑफ इंडियन ट्रेडिशन: ए जर्नी थ्रू साइंटिफिकली वैलिडेटेड इंडियन ट्रेडिशनल नालेज' सीएसआईआर-निस्पर की स्वास्तिक पहल के एक भाग के रूप में विमोचित किया गया।

सीएसआईआर-निस्पर के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक श्री हसन जावेद खान और गुब्बी लैब्स के निदेशक डॉ. एच. एस. सुधीरा द्वारा लोकप्रिय विज्ञान लेखन पर एक समानांतर सत्र सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया।

तत्पश्चात वैज्ञानिक सत्र-II में भारत में विज्ञान संचार: वर्तमान रुझान, अवसर और चुनौतियाँ विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए देश भर के विभिन्न वक्ताओं की प्रस्तुतियाँ शामिल थीं, जिसकी अध्यक्षता टीआईएफआर-एचबीसीएसई के रीडर

डॉ. परेश के. जोशी ने की।

वैज्ञानिक सत्रों के साथ-साथ, सीएसआईआर-निस्पर द्वारा अपने प्रकाशनों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई और वैज्ञानिक रूप से मान्य भारतीय पारंपरिक ज्ञान का प्रसार करने के लिए सीएसआईआर-निस्पर की पहल, स्वास्तिक की ओर से भी प्रदर्शनी लगायी गई।

कार्यक्रम का समापन कला और विज्ञान के संगम पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा एस एंड टी मीडिया और कम्युनिकेटर्स कॉन्क्लेव का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान द्वारा भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2023 के एक भाग के रूप में ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (टीएचएसटीआई) और क्षेत्रीय जैवप्रौद्योगिकी केन्द्र (आरसीबी) फरीदाबाद, हरियाणा में 17-20 जनवरी, 2024 के दौरान आयोजित हुए आईआईएसएफ 2023 के 9वें संस्करण के दूसरे दिन एस एंड टी मीडिया और कम्युनिकेटर्स कॉन्क्लेव का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह प्रतिष्ठित विशेषज्ञों और वक्ताओं द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ शुरू हुआ।

डॉ. मनीष मोहन गोरे, समन्वयक, एसएंडटी मीडिया और कम्युनिकेटर्स कॉन्क्लेव और वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर, ने कॉन्क्लेव की आवश्यकता और इतिहास पर एक संक्षिप्त संबोधन के



साथ सभी छात्रों, प्रतिभागियों और पत्रकारों का स्वागत किया। सीएसआईआर-निस्पर के साइंस मीडिया कम्युनिकेशन सेल (एसएमसीसी) के वरिष्ठ सलाहकार, श्री कुलदीप धतवालिया ने दर्शकों को सम्मेलन

के विषय के बारे में जानकारी दी।

उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि, विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संयुक्त संगठन सचिव, श्री प्रवीण रामदास ने दर्शकों को बताया कि देश में विज्ञान और वैज्ञानिकों



के बारे में परिदृश्य में कैसे परिवर्तन आ रहा है और यह विश्व भर के भारतीय वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए गर्व और सम्मान का विषय है।

उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में प्रसार के लिए विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान का प्रसार करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर मुख्य संबोधन एमिटी एसटीआई फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. विलियम सेल्वामूर्ति ने दिया।

उन्होंने कहा कि सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सुदृढ़ भूमिका है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि विज्ञान भारत की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करेगा। भारत सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना करता है। श्री विलियम सेल्वामूर्ति ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आगामी 25

वर्षों में विकसित भारत बनाने के लिए एक नया प्रक्षेप पथ दिया है और विज्ञान और प्रौद्योगिकी उस लक्ष्य को प्राप्त करने में मुख्य भूमिका निभाएगा।

साइंस इंडिया के संपादक श्री देबोब्रत घोष ने भी सत्र में अपने विचार साझा किए। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मीडिया और कम्युनिकेटर्स कॉन्क्लेव के पहले दिन के एक भाग के रूप में “विज्ञान और सोशल मीडिया: बेहतर प्रथाएं” विषय पर एक मास्टर क्लास और “भारत की विज्ञान कूटनीति में मीडिया का महत्व” पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई थी।

मास्टर क्लास का संचालन भारतीय लोक प्रशासन संस्थान (आईआईपीए) की मीडिया सलाहकार सुश्री राखी बख्शी ने किया और सार्वजनिक आउटरीच अधिकारी, सीएसआईआर-सीसीएमबी डॉ. सोमदत्त कारक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग जे. सी. बोस एस एंड टी विश्वविद्यालय,

वाईएमसीए के प्रमुख डॉ. पवन सिंह, विज्ञान पत्रकार श्री पल्लव बागला और विज्ञान विशेषज्ञ श्री दीपक शर्मा ने भाग लिया।

डॉ. सोमदत्त कारक ने विज्ञान-मीडिया के समन्वय की आवश्यकता के महत्व पर बल दिया और कहा कि सोशल मीडिया जैसे एक्स (X) वैज्ञानिक समुदायों के बीच संबंध और संपर्क को बढ़ावा देता है और नए वैज्ञानिक क्षेत्रों में सहयोग को सक्षम बनाता है।

श्री पल्लव बागला ने दुष्प्रचार पर चर्चा की और विविध वैज्ञानिक सूचनाओं को संप्रेषित करने के लिए उपयुक्त मीडिया के चयन की आवश्यकता पर बल दिया।

सिनेमा के माध्यम से विज्ञान पर पैनल चर्चा का संचालन वरिष्ठ पत्रकार और साइंस इंडिया पत्रिका के संपादक श्री देबोब्रत घोष ने किया। भारतीय प्रशासनिक अधिकारी श्री उदय कुमार वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय के पूर्व सचिव और

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्रमुख डॉ. अरविंद मित्रा और फ्लेम यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर और विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली, नई दिल्ली में विज्ञान

कूटनीति सलाहकार डॉ. चौतन्य गिरि ने पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया और भारत की विज्ञान कूटनीति में मीडिया के महत्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। सीएसआईआर-निस्पर के विज्ञान मीडिया

संचार सेल (एसएमसीसी) ने प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मीडिया और कम्युनिकेटर्स कॉन्क्लेव के मीडिया प्रचार-प्रसार का समन्वय किया।

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2023 का समापन समारोह

भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2023 के चौथे और अंतिम दिन हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर की उपस्थिति में एक भव्य समापन समारोह आयोजित हुआ। 17 से 20 जनवरी, 2024 तक आयोजित मेगा साइंस फेस्टिवल में विज्ञान और नवाचार में प्रतिभाशाली अतिथियों ने सक्रिय सहभागिता की, जिससे अन्वेषण और सहयोग की प्रेरणा मिली।

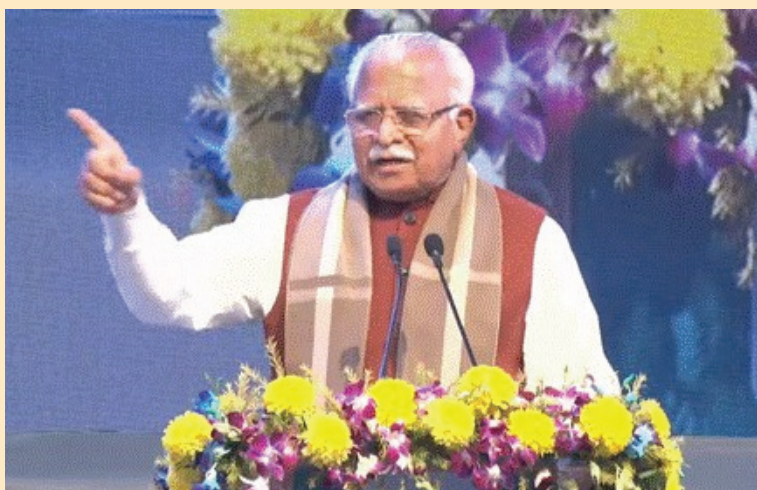
अपने संबोधन के दौरान श्री मनोहर लाल खट्टर ने विज्ञान से बिना किसी भेदभाव के समाज को मिलने वाले असीमित लाभों के बारे में चर्चा की। भविष्य को नया आयाम प्रदान करने में विज्ञान के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने एक महत्वपूर्ण घोषणा के माध्यम से विज्ञान को समाज के साथ और अधिक एकीकृत करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

इस अवसर पर श्री खट्टर ने हरियाणा के फरीदाबाद में 50 एकड़ में फैली एक अत्याधुनिक साइंस सिटी के विकास की योजना की घोषणा की। इस महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्देश्य आम जनमानस में खासतौर पर बच्चों में जिज्ञासा और शोध की संस्कृति को बढ़ावा देते हुए वैज्ञानिक अनुसंधान, विज्ञान सीखने और इसके लिए कार्य करने हेतु

एक समर्पित स्थान बनाना है।

फरीदाबाद में प्रस्तावित साइंस सिटी वैज्ञानिक नवाचार, शिक्षा और आउटरीच का केंद्र बनने के लिए तैयार है। यह

शोधकर्ताओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए एक साथ आने, विचारों का आदान-प्रदान करने और वैज्ञानिक ज्ञान की उन्नति में योगदान करने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा। अपने संबोधन में श्री खट्टर ने युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला जो नवाचार और अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है। साइंस सिटी की कल्पना एक गतिशील केंद्र के रूप में की गई है जो वैज्ञानिक जागरूकता, सीखने को बढ़ावा देने और वैज्ञानिकों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी के



श्री मनोहर लाल खट्टर ने फरीदाबाद में साइंस सिटी विकसित करने की घोषणा की

प्रतिनिधित्व में देश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में निरंतर अग्रसर हो रहा है।

श्री खट्टर ने आमजन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में आईआईएसएफ जैसे प्लेटफार्मों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह महोत्सव वैज्ञानिक समुदाय और आमजन के बीच एक सेतु का काम करता है, साथ ही जटिल अवधारणाओं को उजागर करता है और विज्ञान की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रदर्शित करता

है।

इस अवसर पर अभय करंदीकर (सचिव, डीएसटी), डॉ. शिवकुमार शर्मा (नेशनल आर्गेनाइजेशन सेक्रेटरी, विज्ञान भारती), डॉ. अरविंद सी. रानडे (मुख्य समन्वयक,

आईआईएसएफ 2023), डॉ. पीएस गोयल (अध्यक्ष, नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन) भी उपस्थित थे।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान का साइंस

मीडिया कम्युनिकेशन सेल (एसएमसीसी) ने प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2023 के मीडिया प्रचार-प्रसार का समन्वय दायित्व निभाया।

सीएसआईआर –एचआरडीसी द्वारा चार संकुल (सेक्टर) कौशल परिषदों के साथ समझौता ज्ञापन

सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र (सीएसआईआर-एचआरडीसी), गाजियाबाद (उप्र) ने मेसर्स एग्रीकल्चर स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया (एससीआई), कैपिटल गुड्स एंड स्ट्रैटेजिक स्किल काउंसिल (सीजीएसएससी), हाइड्रोकार्बन सेक्टर स्किल काउंसिल (एचएसएससी) और लाइफ साइंसेज सेक्टर स्किल डेवलपमेंट काउंसिल (एलएसएसएसडीसी) के साथ एक सहयोगात्मक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया है।

इस एमओयू में सीएसआईआर और भारतीय उद्योग के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने की परिकल्पना की गई है।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सीएसआईआर) ने युवा प्रतिभाओं को सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के संपर्क के माध्यम से आवश्यक तकनीकी कौशल से सुसज्जित करने और उन्नत प्रौद्योगिकी के पर्याप्त उपयोग से उत्पन्न तकनीकी अंतर की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 2016 में एक राष्ट्रीय स्तर का अनूठा कार्यक्रम “सीएसआईआर एकीकृत कौशल पहल” शुरू किया था।

इस पहल के लाभार्थियों में स्कूल



छोड़ने वाले, किसान, आईटीआई डिप्लोमा धारक, स्नातक और डॉक्टरेट्स छात्र शामिल हैं।

सीएसआईआर ने इस पहल के अंतर्गत अब तक 4500 से अधिक कौशल-आधारित प्रशिक्षणों के माध्यम से 1.50 लाख से अधिक व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया है, जिसमें ग्रामीण नागरिकों और महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम भी शामिल हैं।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर के व्यापक वैज्ञानिक समूहों के जैविक,

रसायन, इंजीनियरिंग, सूचना और भौतिक विज्ञान को शामिल किया गया है।

सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र (एचआरडीसी), गाजियाबाद (उप्र), सीएसआईआर की केंद्रीकृत प्रशिक्षण इकाई और कौशल पहल का नोडल कार्यालय, ऐसी पहल के प्रदर्शन की समय-समय पर समीक्षा, निगरानी और मूल्यांकन करके महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सीएसआईआर-एचआरडीसी ने भारतीय युवाओं के लिए रोजगार और

उद्यमशीलता के अवसरों को बढ़ाकर इस पहल के प्रदर्शन में सुधार करने के लिए, चार सेक्टर कौशल परिषदों (एसएससी)-एएससीआई, सीजीएसएससी, एचएसएससी और एलएसएसएसडीसी के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर

हस्ताक्षर किया है।

एमओयू पर हस्ताक्षर करने के बाद सीएसआईआर प्रयोगशालाओं और एसएससी दोनों की ओर से संयुक्त कार्यक्रम चलाकर कौशल पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए अपनी विशेषज्ञता का आदान-प्रदान

करने, भारतीय युवाओं के लिए रोजगार और उद्यमशीलता के अवसरों को बढ़ाने और उन्हें वैश्विक स्तर पर बाजार में प्रवेश करने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से एक-दूसरे की सेवाओं का लाभ उठाए जाने की संभावना है।

सीएसआईआर-एनएमएल में लीथियम बैटरी पुनर्चक्रण संयंत्र का उद्घाटन

डॉ. वी.के. सारस्वत, सदस्य, नीति आयोग ने संधारणीय प्रौद्योगिकी और संसाधन प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति के रूप में सीएसआईआर-एनएमएल की अपनी पहली यात्रा के दौरान लीथियम बैटरी पुनर्चक्रण संयंत्र का उद्घाटन किया।

इस कार्यक्रम का आयोजन नीलडीह परिसर स्थित क्रिटिकल मेटल प्रोसेसिंग पायलट स्केल फैसिलिटी में सम्पन्न हुआ। श्री आर. सरवनभवन (नीति आयोग), डॉ. संजय कुमार, डॉ. एस. शिव प्रसाद, डॉ. प्रतिमा मेश्राम और बैटरी पुनर्चक्रण परियोजना में शामिल अन्य प्रमुख सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

डॉ. सारस्वत ने टीम द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की और संयंत्र को बड़ी क्षमता वाली सुविधा में बदलने के महत्व को रेखांकित किया।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस तरह की पहल आत्मनिर्भर दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो बैटरी निर्माण में आत्मनिर्भरता में योगदान करती है, जो संधारणीय ऊर्जा समाधान हेतु भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है।

सीएसआईआर-एनएमएल की अपनी



यात्रा के दौरान, डॉ. सारस्वत ने युवा वैज्ञानिकों और वरिष्ठ सदस्यों दोनों के साथ बातचीत की और शहरी खनन, लाल मिट्टी के उपयोग, लीथियम-आयन पुनर्चक्रण और मैग्नीशियम निष्कर्षण सहित विभिन्न क्षेत्रों में संस्थान के उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की। उन्होंने आयात पर निर्भरता कम करके भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण खनिजों, धातुओं और सामग्रियों के साथ काम करने

में वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

डॉ. सारस्वत ने नीति आयोग में रेड मड पुनर्चक्रण हेतु गठित टास्क फोर्स के अध्यक्ष के रूप में, रोटरी किल्ल, लीचिंग और स्मेल्टिंग सहित सीएसआईआर-एनएमएल में चल रहे विभिन्न यूनिट संचालन का निरीक्षण किया।

उन्होंने संस्थान से संधारणीय संसाधन प्रबंधन के लिए फास्ट-ट्रैकिंग प्रक्रियाओं

के महत्व को मजबूत करते हुए दुर्लभ निष्कर्षण के प्रयासों में तेजी लाने का आग्रह किया।

सीएसआईआर-एनएमएल में लीथियम बैटरी पुनर्चक्रण संयंत्र पर्यावरण की दृष्टि से जिम्मेदार और संसाधन-कुशल

प्रौद्योगिकियों की दिशा में भारत के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार है।

डॉ. सारस्वत की यात्रा और प्रोत्साहन के शब्द राष्ट्रीय उद्देश्यों और वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप अग्रणी अनुसंधान और पहल के प्रति संस्थान की

प्रतिबद्धता को और अधिक रेखांकित करते हैं।

यह आयोजन महत्वपूर्ण धातुओं और सामग्रियों के क्षेत्र में एक हरित और आत्मनिर्भर भविष्य की दिशा में सहयोगात्मक यात्रा का एक प्रतीक है।

सीएसआईआर-एनआईओ द्वारा ओशनोग्राफिक सर्टिफिकेट कोर्स का संचालन



सीएसआईआर – राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एनआईओ) ने समुद्र विज्ञान के क्षेत्र में सहयोग और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में कोलंबो सिक्योरिटी कॉन्क्लेव (सीएससी) के सदस्य देशों के लिए एक महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया गया है।

इस प्रमुख पहल का उद्घाटन सत्र 15 जनवरी, 2024 को आयोजित किया गया।

यह शैक्षिक प्रयास प्रथम सीएससी समुद्र विज्ञानी और हाइड्रोग्राफर सम्मेलन का प्रत्यक्ष परिणाम है, जो नवंबर 2022 में गोवा और हैदराबाद में हुआ था।

इस सम्मेलन के बाद, सीएससी देशों के वैज्ञानिकों ने संयुक्त रूप से जून से सितंबर 2023 तक हिंद महासागर क्षेत्र में दो अभियान चलाए। दिसंबर 2023 में अंटार्कटिक में शुरू किया गया संयुक्त अभियान वर्तमान में चल रहा है।

प्रो. सुनील कुमार सिंह, निदेशक, सीएसआईआर-एनआईओ ने उद्घाटन भाषण के दौरान, हिंद महासागर क्षेत्र की जटिलताओं को समझने में तटीय देशों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।

एक महीने तक चलने वाले सर्टिफिकेट कोर्स का समन्वय वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और, जैविक समुद्र विज्ञान प्रभाग के प्रमुख डॉ. मंगेश उत्तम गौंस द्वारा किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम में प्रतिभागी हिंद

महासागर और दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन के गहरे प्रभावों से निपटने को लेकर और समुद्र विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

इस कार्यक्रम में व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए इंटरैक्टिव चर्चाएं, सर्वोत्तम

कार्यप्रणालियों का आदान-प्रदान और व्यावहारिक परियोजना कार्य शामिल हैं।

यह पाठ्यक्रम विचारों के समृद्ध आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करेगा और समुद्र विज्ञान में ज्ञान के बढ़ते भंडार में योगदान देगा।

इस भागीदारी का उद्देश्य पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने, टिकाऊ कार्यप्रणालियों को बढ़ावा देने और वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देने में भाग लेने वाले देशों की क्षमताओं को बढ़ाना है

सीएसआईआर- निस्पर में स्थापना दिवस समारोह एवं ओपन डे के अवसर पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) की स्थापना 14 जनवरी, 2021 को हुई थी। सीएसआईआर- निस्पर ने 8-9 फरवरी, 2024 के दौरान पूसा, नई दिल्ली में अपना तीसरा स्थापना दिवस मनाया। आठ फरवरी, 2024 को ओपन डे, स्थापना दिवस समारोह के कार्यक्रमों के तहत संस्थान ने एक साथ दो कार्यक्रम आयोजित किए। इनमें पीएचडी छात्रों के साथ बातचीत, विद्यार्थी-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम और सीएसआईआर-निस्पर के पीएचडी छात्रों के लिये पोस्टर प्रस्तुति प्रतियोगिता शामिल थी।

आठ फरवरी के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर दीपक कुमार, सदस्य, सीएसआईआर-निस्पर अनुसंधान परिषद एवं भूतपूर्व प्रोफेसर, जेएनयू और वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान (निस्टैड्स) उपस्थित

थे। उन्होंने अपने भाषण में सीएसआईआर-निस्पर के पीएचडी के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने शिक्षण एवं अनुसंधान के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अनुसंधान और शिक्षण एक साथ चलना



चाहिए तथा एक अच्छा शोधकर्ता बनने के लिए व्यक्ति को एक अच्छा शिक्षक भी होना चाहिए।

प्रोफेसर रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने स्टूडेंट इंटरैक्शन मीट में पीएचडी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पीएचडी अध्ययन गुरु-शिष्य परंपरा का एक सही उदाहरण है। यह शोध अध्ययन अपने विद्यार्थियों के लिये पीएचडी गाइड के महत्व पर केंद्रित है जो माता-पिता-बच्चे के रिश्ते की तरह है,

एक ऐसा बंधन जो हमेशा बना रहता है।

पीएचडी विद्यार्थियों के साथ एक महत्वपूर्ण चर्चा के बाद, सीएसआईआर-निस्पर के पीएचडी विद्यार्थियों के लिये एक पोस्टर प्रस्तुति प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इसमें विभिन्न विषयों पर 31 पोस्टरों का प्रदर्शन किया गया जिनमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), वैज्ञानिक स्वभाव के प्रति धारणा, सीएसआईआर-: एक क्षमता निर्माण और मानव संसाधन विकास कार्यक्रम, खाद्य पदार्थों के स्वस्थ विकल्पों के

लिये खाद्य लेबलिंग का ज्ञान, भारत में स्टेम सेल थेरेपी और क्रियान्वयन के लिये चुनौतियाँ : डॉक्टर के दृष्टिकोण और विज्ञान संचार के लिये लोकप्रिय ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म - एक समीक्षा दूसरों के बारे में शामिल थी।

पोस्टरों का मूल्यांकन डॉ. वंदना कालिया, वैज्ञानिक एफ, डीएसआईआर, डॉ. मीनाक्षी सिंह, मुख्य वैज्ञानिक सीएसआईआर मुख्यालय और श्री आर.के.एस. रौशन, प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-निस्पर

ने किया। वे सभी विद्यार्थियों के प्रयासों से प्रभावित हुए और अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने और यह देखने का अवसर है कि वे कैसे काम कर रहे हैं और उनकी भविष्य की योजनाओं के बारे में जानते हैं।

सीएसआईआर-निस्पर के प्रमुख आउटरीच कार्यक्रम-जिज्ञासा द्वारा स्कूली विद्यार्थियों के लिए

एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी। यह वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और केंद्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) के बीच एक छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम है। इसे जुलाई 2017 में शुरू किया गया था।

कार्यक्रम के दौरान प्रो.रंजना अग्रवाल ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि सीएसआईआर हमारे दैनिक जीवन में एक



प्रमुख अवयव के रूप में कार्य कर रहा है। इस संस्थान ने चुनाव के लिये अमिट स्याही से लेकर दूध के पाउडर तक सबके उपयोग में अपना योगदान दिया और यहां तक कि हाल में अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण-कार्य में भी अपना योगदान दिया है।

09 फरवरी, 2024 को गणमान्य व्यक्तियों में सम्मानित अतिथि, डॉ. अनिल कोठारी,

महानिदेशक, म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल और डॉ. सुदेश कुमार यादव, निदेशक, सीएसआईआर-हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर उपस्थित हुए।

स्थापना दिवस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर योगेश सिंह और सदस्य, सीएसआईआर सोसायटी थे।

सीएसआईआर- निस्पर ने अपना तीसरा स्थापना दिवस मनाया

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-निस्पर ने विज्ञान संचार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नवाचार (एसटीआई नीति) अनुसंधान, नवाचार और अनुसंधान को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए एक गतिशील कार्यक्रम के साथ अपना स्थापना दिवस मनाया। प्रोफेसर रंजना अग्रवाल

के निर्देशन में संस्थान ने इस अवसर को महत्वपूर्ण कार्यक्रमों और सहयोगात्मक प्रयासों के साथ मनाया।

स्थापना दिवस कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति और सीएसआईआर सोसायटी के सदस्य प्रोफेसर योगेश सिंह उपस्थित थे। प्रो. सिंह ने " उभरता भारत: भारत का भविष्य" विषय पर एक प्रेरक स्थापना

दिवस व्याख्यान दिया। उन्होंने नीति अनुसंधान, नवाचार और विज्ञान संचार के लिए विश्व स्तर पर सम्मानित थिंक टैंक और संसाधन केंद्र बनने के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) के दृष्टिकोण की सराहना की। प्रो. सिंह ने विकसित भारत बनने की दिशा में भारत की यात्रा



में विज्ञान संचार की अभिन्न भूमिका पर जोर दिया।

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने सभी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रसार के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर बल दिया। प्रो. अग्रवाल ने संस्थान की नई पहलों पर प्रकाश डालते हुए विज्ञान समाचार माध्यम संचार प्रकोष्ठ (साइंस मीडिया कम्युनिकेशन सेल), स्वस्तिक (एसवीआईएसटीआईके), प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर (टेक्नोलॉजी रेडीनेस लेवल) जैसे प्रयासों आदि के ठोस परिणामों का उल्लेख किया। उन्होंने अधिकतम दर्शकों तक पहुंचने के साधन के रूप में भाषा विविधता पर प्रमुखता से ध्यान देने पर भी बल दिया। प्रोफेसर अग्रवाल ने एशिया के सबसे बड़े राष्ट्रीय विज्ञान पुस्तकालय के मेजबान के रूप में संस्थान की प्रमुख भूमिका पर अंतर्दृष्टि साझा की।

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक ने अपने संबोधन में साइंस मीडिया कम्युनिकेशन सेल-(एसएमसीसी) का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि यह मीडिया और विज्ञान के बीच अंतर को

पाटने वाली एक अभिनव पहल है। इस प्रकोष्ठ को जनता तक वैज्ञानिक उपलब्धियों के संचार को बढ़ाने, समाज में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ज्ञान की बेहतर समझ को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है। प्रौद्योगिकी तत्परता के स्तर का आकलन करने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम (एनआरडीसी) के सहयोग से नेत्र (एनईटीआरए) फ्रेमवर्क विकसित किया गया है। सीएसआईआर-निस्पर एनआरडीसी के लिए प्रौद्योगिकियों को प्रमाणित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और तकनीकी प्रगति का समर्थन करेगा। प्रोफेसर अग्रवाल ने सीएसआईआर प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर ग्रामीण आजीविका बनाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर भी प्रकाश डाला। यह पहल उन्नत भारत अभियान और विज्ञान भारती के नेटवर्क का उपयोग करेगी, जिसका लक्ष्य नवाचार के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना है। प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप, स्वस्तिक (एसवीआईएसटीआईके) भारत के वैज्ञानिक रूप से मान्य पारंपरिक ज्ञान का प्रसार करना चाहता है। यह पहल पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और प्रचार के प्रति सीएसआईआर-निस्पर के समर्पण को

दर्शाती है।

डॉ. अनिल कोठारी, महानिदेशक म. प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल ने सीएसआईआर- निस्पर को वैज्ञानिक जानकारी के लिए एक केंद्रीकृत मंच बनने के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए और डॉ. सुदेश कुमार यादव, निदेशक सीएसआईआर-हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर ने सीएसआईआर-निस्पर प्रकाशनों के विमोचन और पारंपरिक ज्ञान के प्रसार पर ब्रोशर तथा स्वास्तिक के संचार सहित समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर की प्रक्रिया में भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने किया, और डॉ. चारु वर्मा सीएसआईआर- निस्पर की मुख्य वैज्ञानिक और अध्यक्ष, स्थापना दिवस समारोह समिति द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। सीएसआईआर-निस्पर प्रभावशाली सहयोग, विज्ञान संचार में प्रगति, एसटीआई नीति अनुसंधान और भारत के वैज्ञानिक परिदृश्य में सार्थक योगदान द्वारा भविष्य के लिए आशान्वित है। इस आशा के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्री राम मंदिर निर्माण-कार्य में सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

श्री राम मंदिर निर्माण- कार्य में अन्य संस्थानों जैसे आईआईटी, इसरो के कुछ इनपुट के अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत सीएसआईआर (वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद) और डीएसटी (विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग) के कम से कम चार प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा तकनीकी रूप से सहायता प्रदान की गई ।

डॉ. जितेंद्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री ने नई दिल्ली में इस बात को बताते हुए कहा कि जिन चार संस्थानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उनमें सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की, सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई) हैदराबाद, डीएसटी-भारतीय खगोलभौतिकी संस्थान (आईआईए) बेंगलुरु और सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएचबीटी), पालमपुर, हिमाचल प्रदेश शामिल हैं।

मंत्री महोदय ने कहा, “सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने राम मंदिर निर्माण में प्रमुख योगदान दिया है।

सीएसआईआर-एनजीआरआई हैदराबाद ने नींव डिजाइन और भूकंपीय सुरक्षा पर महत्वपूर्ण इनपुट दिए डीएसटी-आईआईए बेंगलुरु ने सूर्य तिलक के लिए सूर्य पथ पर तकनीकी



सहायता प्रदान की और सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर ने 22 जनवरी को अयोध्या में दिव्य राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए ट्यूलिप के फूल खिलाए थे।

उन्होंने कहा, “सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की प्रारंभिक चरण से ही राम मंदिर के निर्माण में शामिल रहा है। संस्थान ने मुख्य मंदिर के संरचनात्मक डिजाइन, सूर्य तिलक तंत्र को डिजाइन करने, मंदिर की नींव के डिजाइन की जांच और मुख्य मंदिर की संरचनात्मक देखभाल की निगरानी में योगदान दिया है।”

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि सीबीआरआई के अलावा, सीएसआईआर-एनजीआरआई

हैदराबाद ने भी नींव डिजाइन और भूकंपीय/भूकंप सुरक्षा पर महत्वपूर्ण इनपुट दिए।

उन्होंने कहा कि कुछ आईआईटी विशेषज्ञ सलाहकार समिति का भी हिस्सा थे और यहां तक कि भव्य भवन के निर्माण में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों का भी उपयोग किया गया है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि मुख्य मंदिर भवन, जो 360 फीट लंबा, 235 फीट चौड़ा और 161 फीट ऊंचा है, राजस्थान के बंसी पहाड़पुर से निकाले गए बलुआ पत्थर से बना है।

इसके निर्माण में कहीं भी सीमेंट या

लोहे और इस्पात का उपयोग नहीं किया गया है।

उन्होंने कहा कि 3 मंजिला मंदिर का संरचनात्मक डिजाइन भूकंप प्रतिरोधी बनाया गया है और यह 2,500 वर्षों तक रिक्टर पैमाने पर 8 तीव्रता के मजबूत भूकम्पीय झटकों को बर्दाश्त कर सकता है।

डॉ. सिंह ने कहा कि राम मंदिर की एक अनूठी विशेषता इसका सूर्य तिलक तंत्र है, जिसे इस तरह से डिजाइन किया गया है कि हर वर्ष श्रीराम नवमी के दिन दोपहर 12 बजे लगभग 6 मिनट के लिए सूर्य की किरणें भगवान राम की मूर्ति के माथे पर पड़ेंगी।

उन्होंने कहा कि राम नवमी हिंदू कैलेंडर के पहले महीने के नौवें दिन मनाई जाती है, यह आमतौर पर मार्च-अप्रैल में आती है, जो भगवान विष्णु के सातवें अवतार भगवान राम के जन्मदिन का प्रतीक है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने कहा कि भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान, बंगलुरु ने सूर्य पथ पर तकनीकी सहायता प्रदान की और ऑप्टिका, बंगलुरु लेंस और पीतल ट्यूब के निर्माण

में शामिल है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश) ने 22 जनवरी को अयोध्या में दिव्य राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह हेतु ट्यूलिप ब्लूम्स भेजा था।

उन्होंने कहा कि यद्यपि इस मौसम में ट्यूलिप में फूल नहीं आते हैं। यह केवल जम्मू-कश्मीर और कुछ अन्य ऊंचे हिमालयी क्षेत्रों में ही उगता है और वह भी केवल वसंत ऋतु में इसकी पैदावार होती है। सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर ने हाल ही में एक स्वदेशी तकनीक विकसित की है, जिसके माध्यम से ट्यूलिप को उसके मौसम का इंतजार किए बिना पूरे वर्ष उपलब्ध कराया जा सकता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह कहा कि रोजमर्रा की जिंदगी में सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है, क्योंकि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अमृतकाल के दौरान आत्मनिर्भर और विकसित भारत/2047 के रूप में उभरने के शिखर पर है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि देश भर

में फैली सीएसआईआर प्रयोगशालाएं नए भारत के आधुनिक स्मारकों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

उन्होंने कहा कि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन्स (आईआईआईएम) जम्मू अरोमा मिशन और पर्पल रिवोल्यूशन का नेतृत्व कर रहा है।

इसी प्रकार, मंत्री महोदय ने बताया कि राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) लखनऊ ने 'एनबीआरआई नमो: 108' नाम से कमल की एक नई किस्म विकसित की है। कमल की यह किस्म-नमो: 108—मार्च से दिसंबर तक खिलती है और यह पोषक तत्वों से भरपूर होती है।

यह पहली कमल की किस्म है, जिसका जीनोम इसकी विशेषताओं के लिए पूरी तरह से अनुक्रमित है।

मंत्री महोदय ने कहा कि भारत दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से पांचवीं तक पहुंच गया है, जल्द ही हम चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होंगे और इसके बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होंगे।

सीएसआईआर-आईएचबीटी ट्यूलिप गार्डन आम जनमानस के लिए खुला

डॉ. सुदेश कुमार यादव, निदेशक, सीएसआईआर-हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर द्वारा फ्लोरीकल्चर मिशन के अंतर्गत विकसित किए गए ट्यूलिप गार्डन को आम जनमानस के लिए खोल दिया गया है।

इस मिशन के अंतर्गत ट्यूलिप की खेती को लोकप्रिय बनाने के लिए

संस्थान पिछले दो वर्षों से इन सुंदर फूलों को अपने परिसर में लगा रहा है।

इस बार उद्यान में 6 विभिन्न रंगों की प्रजातियों के 50,000 बल्ब्स लगाए गए हैं।

इस उद्यान में, राज्य के भीतर और बाहर से, बड़ी संख्या में आगंतुकों के आने का अनुमान है।

पिछले वर्ष, देश के विभिन्न क्षेत्रों से

70,000 से अधिक पर्यटक इस सुंदर ट्यूलिप गार्डन को देखने आए थे।

इस वर्ष उद्यान खुलने के प्रथम दिन ही केंद्रीय विद्यालय, भानला (हि.प्र) के लगभग 200 विद्यार्थियों व अध्यापकों ने जिज्ञासा प्रोग्राम के अंतर्गत इसका भ्रमण किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी ने ट्यूलिप की व्यावसायिक खेती के लिए हिमाचल



प्रदेश की लाहौल घाटी में इसके फूल और बल्ब उत्पादन पर प्रायोगिक परीक्षण शुरू किया था।

इस मिशन की शुरुआत करने के लिए सहकारी समितियों के कई किसानों को शामिल किया गया था इनमें महादेव फलोरीकल्चर सोसाइटी, मदाग्रां पट्टन वैली फलोरीकल्चर सोसाइटी लिमिटेड शांशा और टीनन व्हाइट माउंटेन फलोरीकल्चर सोसाइटी लिमिटेड, जाँगला को ट्यूलिप की खेती करने के लिए प्रशिक्षित और सशक्त बनाया गया, जो अब बल्ब और फूलों के उत्पादन के लिए ट्यूलिप की खेती कर रहे हैं।

ट्यूलिप एक कंदिल कर्तित फूल है जिसकी अंतर्राष्ट्रीय व घरेलू बाजार में काफी माँग है।

दुनिया में कर्तित फूलों के व्यापार में यह तीसरे स्थान पर है।

इस मिशन का उद्देश्य इन फूलों की खेती से जुड़े उद्यमियों और किसानों के लिए आकर्षक आय का सृजन करना एवं देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सशक्त प्रयास करना है।

यह संस्थान अगले 7-8 वर्षों में देश की वार्षिक घरेलू मांग को पूरा करने के लिए ट्यूलिप बल्ब-उत्पादन करने की दिशा में ठोस कदम उठाएगा।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक

सीएसआईआर समाचार